अवजानासि मां यस्मादतस्ते न भविष्यति ।

मत्प्रसूतिमनाराध्य प्रजेति त्वां शशाप सा ।।77।।

अन्वय यस्मात् मां अवजानासि अतः मत्प्रसूतिम् अनाराध्य ते प्रजा न भविष्यति इति सा शशाप।

अनुवाद क्योंकि तुम (परिक्रमा आदि समुचित सत्कार न करने से) मेरा तिरस्कार कर रहे हो, अतः मेरी सन्तान की आराधना किए बिना तुम्हारे सन्तान न होगी, ऐसा उसने (कामधेनु ने) तुम्हें शाप दिया।

टिप्पणियाँ

अवजानासि अव धातु ज्ञा लट्, मध्यम पुरुष, एकवचन। (तुम) अनादर या तिरस्कार करते हो।

प्रसूति प्र धातु सू क्तिन्।

अनाराध्य अन (नञ्.आ धातु राध् ल्यप्। आराधना (सेवा, पूजा) किए बिना अर्थात् उसे प्रसन्न किए बिना।

प्रजा सन्तति, प्र धातु जन् ड़ टाप्।